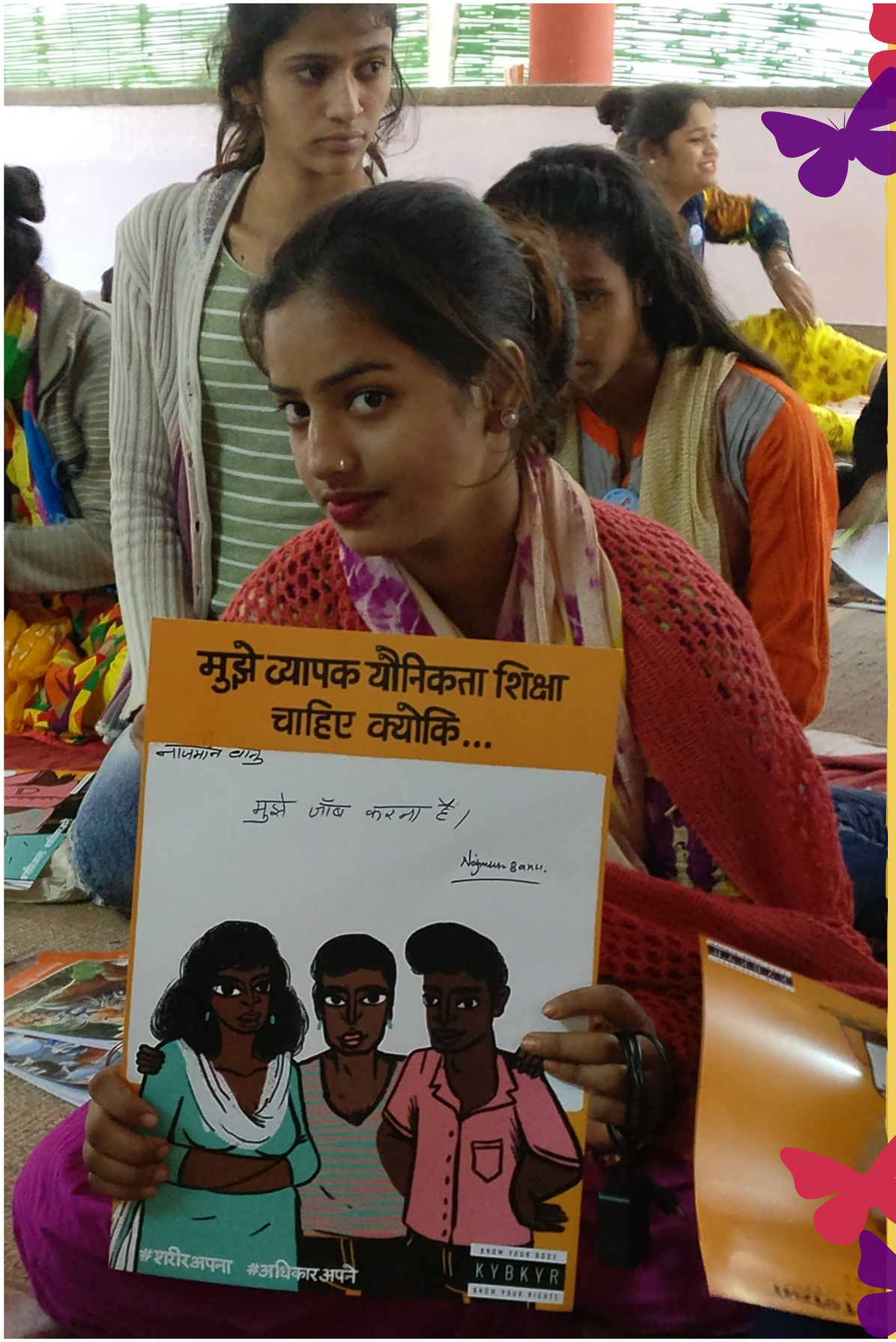

नाजमीन बानु (कोयल बानु)

मुझे घर पर सब कोयल कहते हूँ। मैं 17 वर्ष की हुँ और सहाडा गाँव में रहती हूँ। जब अंजु दीदी ने मुझे तितली परियोजना कि मीटिगों से जोड़ा मुझे लगा कि इन मीटिंग के मुददे सही नही है क्योंकि ऐसे मुददे पर कोई बात नही करता है और मैने मिटिगों में आने के लिये मना कर दिया। साथ ही मेरा मानना था कि मेरे घर और समुदाय मे सब कुछ वैसे ही है जैसे होना चाहिए। मैने 10वी पास करके पढ़ाई छोड़ दी थी। मैं मुस्लिम समाज की लड़की हूँ और मुस्लिम समाज में ही रहती हूँ एक ऐसे वर्ग में जहाँ लड़कियों की जल्दी शादी कर दी जाती है और लड़कियों को ना ज्यादा पढ़ने की ना ही घर से बाहर निकलने की अनुमति दी जाती है। धीरे धीरे मेरा ध्यान इस तरह की घटनाओं और असमानताओं पर गया और जैसे जैसे अंजु दीदी मुझे मीटिगों से जोड़ते गयीं मेरी सोच बदलती गई और मुझे लगा कि यह मुददे ऐसे है जो लड़कियों को अपने अधिकार के बारें में बताते है। इन मीटिंगो से मुझ में बहुत बदलाव आये है। अब मै अपनी बात दूसरो को समझा सकती हूँ व अपनी बात रखने में अब हिचक नही होती है। आज मैं तितली से सीखे हुए मुद्दों के बारे मे मेरे वर्ग कि लड़कियों को मेरे साथ जोड़कर सत्र के द्वारा उन पर चर्चा करती हूँ। इससे पहले मैं ना किसी को अपनी बात समझा सकती थी और ना ही इन मुद्दों पर मेरी कोई समझ थी जैसे हिंसा, सामाजिक भेदभाव, माहवारी, किशोरवास्था मे होने वाले बदलाव, एचाईवी, गर्भनिरोधक को समझना इनके बारे ना तो मुझ मे समझ थी ओर ना ही मैं इन मुददो के बारे मे किसी से चर्चा कर सकती थी लेकिन आज मै इन मुददो पर सत्र के द्वारा सहाड़ा की लड़कियों से चर्चा करती हूँ और इन मुद्दों के बारे मे विस्तार से बात करती हूँ।

Jatan

the yp foundation
INTERSECTIONAL | FEMINIST | RIGHTS-BASED